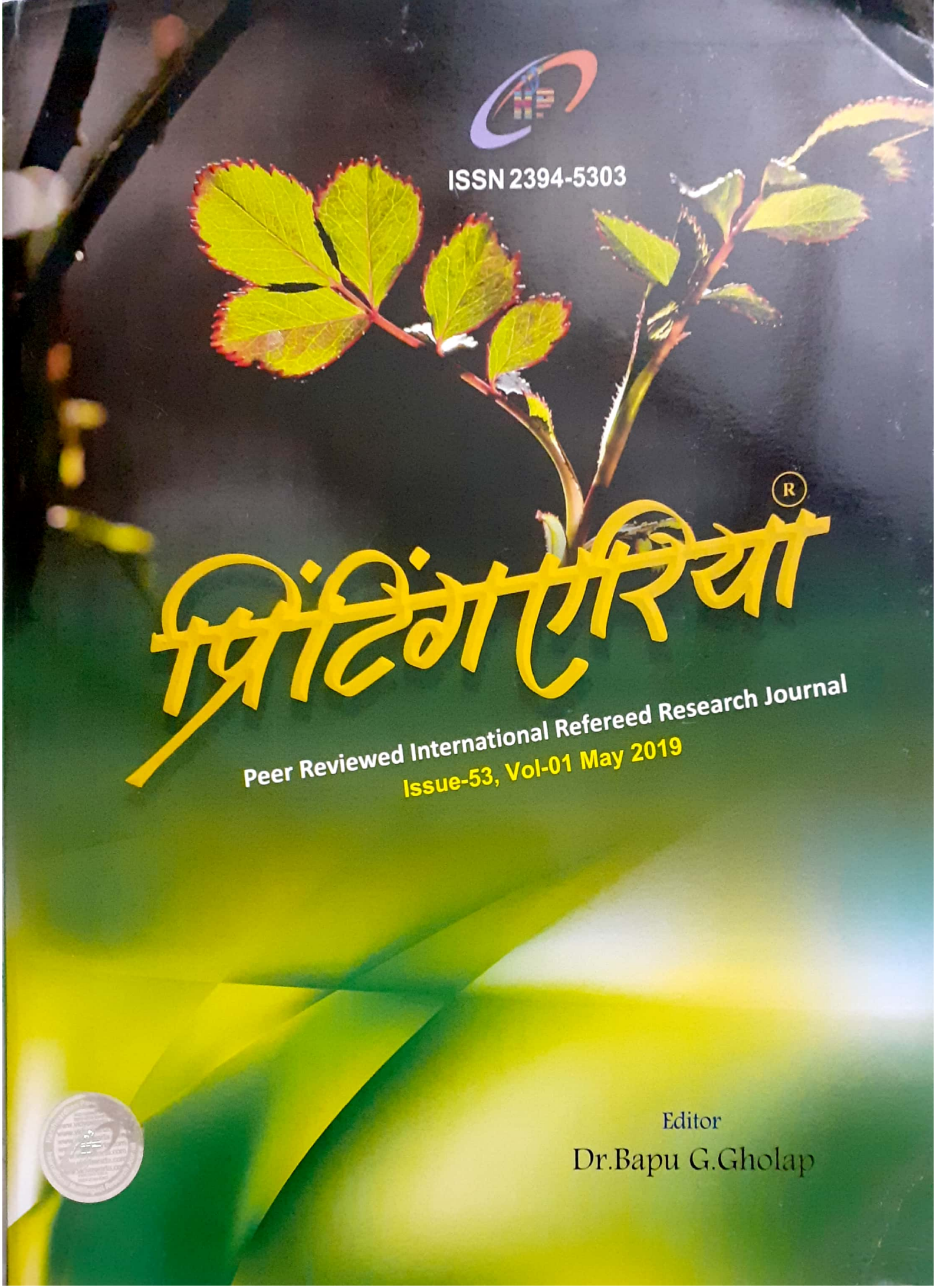

ISSN 2394-5303

प्रिंटिंग एरिया®

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

Issue-53, Vol-01 May 2019

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

Scanned by CamScanner

Index

01) THE POSITION OF ETHICS IN VENTURE CONTROL, SETTLEMENT ....
Mr. Chavan Ganesh Sakharam, Dr.Manishkumar.N.Varma, Pune ||10

02) Life Skills Integrated Curriculum in Schools
Dr. Geetha, K , Sonapur ||14

03) PANCHAYAT RAJ IN KARNATAKA: A STUDY ON THE ELECTIONS .....
Nagendrappa K.T, Dr. Y. Gangadhara Reddy,Bangalore. ||25

04) Problems faced by spinners and weavers for weaving of khadhi clothes....
Dr. A. Sujatha , G.Gunasri, Bodinayakanur. ||36

05) Parental Encouragement among high school students of Jalgaon District
Mrs. Sunita Arvind Jagtap, Chalisgaon ||40

06) Electronic resources and their application and limitations: a study
Kimi, Sadik Husian,Delhi ||43

07) Public Administration in india
Dr.santosh B.Kurhe, Parbhani. ||48

08) Recent trends in Capital Formation in Agriculture
Prof. Dr. T. P. More,Buldana (MS ||51

09) Incest and Adultery in Select novels of Ian McEwan
Deepati Pant, Nainital ||56

10) Pradhan Mantri Mudra Yojana as a tool of Finance Inclusion .....
Pardeep kumar, Gurana (Hisar) ||58

11) Impact of GST on Service Sectors
Prof. Dr. Sangram R. Raghuwanshi, Amravati ||63

12) GENDER INEQUALITY IN HIGHER EDUCATION
Dr.Manjulata, Km. Sapna, Meerut ||65

13) Intellectual property (IP): An Introduction
Miss. Mahadevi P. Shikare,Solapur ||71

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned by CamScanner

14) Concept of Youth Unemployment in India
Dr. Paresh A. Shrimali, Patan ||73

15) Developing Inclusive Practices for Effective Implementation .....
Ms. Sharmishtha Solanki , Gujarat ||76

16) WATER POLLUTION AND ITS TREATMENT: THE ENVIRONMENT CONCERN
Dr. Usha Kumari, AzamgarhR ||80

17) Impact of Demonetization on Indian Economy
Prof. Warghade Janardhan Bhau,Palghar ||85

18) समाज मनाच्या एकवटलेल्या तिखट उद्‌गाराची कविता !
प्राचार्य डॉ.वसंत बिरादार,लातूर ||88

19) स्त्रीगीते : कौटुंबिक भावविश्व
डॉ. गौतम झ. ढवळे, लातूर ||92

20) जागतिकीकरणात मराठी भाषेचे संवर्धन
प्रा.डॉ.जगताप उज्वला शिवराम,परभणी ||94

21) डॉ. राममनोहर लोहिया यांचे जातीसंबंधी विचार
प्रा.डॉ. दम एस.आर. ,बीड || 97

22) उच्च शिक्षणाच्या विकासात राजर्षी छत्रपती शाहू महाराज यांचे योगदान
प्रा.अनंत दादाराव मरकाळे,बीड ||100

23) नागपूर जिल्हयातील आदिवासी शेतक–यांच्या विविध समस्या
शालिनी दुर्गाजी मेन्ढें, डॉ. एम. के. नगरारे ,वर्धा ||103

24) राष्ट्रीय असंसर्गजन्य रोग नियत्रंन कार्यक्रम व त्याअंर्तगत कार्यरत .....
कु. संगीता ब. रोहनकर, डॉ.सुनिल म. ठाकुरवार ||114

25) ग्रामीण युवकांचे शैक्षणिक, राजकीय स्थिती ज्ञान व विकासात्मक दृष्टीकोन
डॉ. संगीता ओमनाथ तिहीले,अकोला. ||120

26) बंजारा जाति और संगीत
डॉ० वन्दना अग्रवाल,मेरठ ||123

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned by CamScanner

27) मन्नू भंडारी की कहानियों में आधुनिक स्त्री–जीवन का द्वंद्व
अंजु लता,असम ||127

28) विकास कर्म में नारी का योगदान
डा. नीलम गौड, हनुमानगढ ||131

29) संजीव के उपन्यासों में आदिवासी जन-जीवन की समस्याओं का चित्रण
डॉ. लक्ष्मण तुळशीराम काळे, नांदेड ||133

30) माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम .....
डॉ.देवेन्द्र कौर, सादुलशहर ||135

31) समकालीन कवि अज्ञेय एवं मुक्तिबोध की काव्यभाषा का तुलनात्मक अध्ययन
डॉ. पठाण ए.एम., बीड. ||138

32) तबला वादक की कुशलता और सूझबूझपूर्ण संगत से कथक नृत्य में रसोत्पत्ति
शशिकांत शर्मा, प्रो० वन्दना चौबे, राजस्थान ||141

33) जी०ई०मूरः शुभ की अपरिभाष्यता
डॉ०वीना शर्मा, गोरखपुर ||144

34) यथार्थवाद : केदारनाथ अग्रवाल की कविता
रीना यादव, इलाहाबाद ||146

35) मानव गतिविधियाँ और पर्यावरणीय अवकर्ष
डॉ. सुनील बाघला, डॉ. सुरजीत सिंह कस्वाँ, श्रीगंगानगर (राज.) ||149

36) मानवीय क्रियाऐं एवं पर्यावरण में आकस्मिक परिवर्तन
Dr. Rajesh Kumar, Haryan. ||150

37) गांधी विचार के आलोक में महिला सशक्तिकरण
डॉ०शैलेन्द्र तिवारी,वाराणसी ||152

38) भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की योगदान (१८५७–१९४७)
Vikram S/o Randhir Singh,Kurukshetra ||156

39) कौटिल्य के आर्थिक विचारों की वर्तमान में सार्थकता
डॉ निहारिका श्रीवास्तव, प्रतापगढ़ ||160

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned by CamScanner

27

मन्नू भंडारी की कहानियों में आधुनिक स्त्री–जीवन का द्वंद्व

अंजु लता
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर, असम

****

मन्नू भंडारी आजादी के बाद की प्रमुख लेखिकाओं में से एक हैं। यह हिंदी साहित्य का वह दौर था जब आधुनिकता का एक नया रूप हिन्दुस्तान में विकसित हो रहा था। साहित्य में उषा प्रियंवदा और कृष्णा सोबती जैसी लेखिकाएँ अपनी उपस्थिति दर्ज कर चुकी थीं। हिन्दी साहित्य के इतिहास में स्त्री लेखिकाओं को जो जगह अभी तक प्राप्त नहीं हो पाई थी उस कमी को आजादी के बाद की ये लेखिकाएँ सहज ही दूर कर देती हैं। साहित्य पटल पर कई स्त्री लेखिकाओं का आगमन इस युग की प्रमुख विशेषता है। इसका मुख्य कारण इसे माना जा सकता है कि नवजागरण–काल में जिन स्त्री प्रश्नों को लेकर सामाजिक परिवर्तन का जो प्रयास किया गया उसके सीमित दायरे में ही सही लेकिन फायदे जरूर हुए। आजादी के बाद इसके परिणाम और भी प्रत्यक्ष हुए और नब्बे के बाद तो हिन्दी साहित्य में लेखिकाओं ने जबर्दस्त हस्तक्षेप किया है।

मन्नू भंडारी ऐसी संवेदना की लेखिका हैं जिसमें औरत को पूरे सामाजिक परिवेश के आलोक में सहज रूप से समझने और चित्रित करने का प्रयास मिलता है। परंपरा ने हमें औरत के जीवन को दो तरह से देखने की दृष्टि प्रदान की थी। एक नजरिया रीतिकालीन था जहाँ औरत को भोग की वस्तु की तरह देखा गया और दूसरा नजरिया छायावादी था जहाँ स्त्री को मुक्त करने की माँग तो उठायी गई लेकिन उसे देवी, माँ, सहचरी, प्राण की सीमाओं में रखते हुए ही। इन दो तरह की विचारधाराओं और पूँजीवादी परिस्थितियों के बीच फँसी स्त्री समाज में अपना वास्तविक स्थान निर्धारित न कर सकी। इन्हीं परिस्थितियों में विकसित आजादी के बाद का हमारा साहित्य स्त्री को सबसे पहले एक मनुष्य के रूप में देखने पर जोर देता है। अपने समय की विसंगतियों के बावजूद इस दौर का साहित्य स्त्री जीवन के द्वंद्व का दिखाने में काफी हद तक सफल रहा है। परिवार और समाज के बीच फँसी औरत आखिर अपने लिए क्या चुने? परिवार का सामंती चरित्र और बाजार से ग्रस्त समाज दोनों ने औरत की स्वतंत्र छवि को अपने हिसाब से निर्धारित किया। इस दौर का साहित्य किसी प्रकार का आंदोलन भले न करता हो, वह परिवार और समाज के बीच फँसी औरत के जीवन के दर्द को बखूबी रेखांकित करता है।

मन्नू भंडारी इसी भाव को लेकर अपनी कहानियाँ रचती हैं। इनकी कहानियों में आजादी के बाद के नए समाज में विकसित 'आधुनिक' मानव की संवेदना आकार लेती है। इस समाज का अपना अलग यथार्थ था जिसे लेखिका सूक्ष्मता के साथ अपनी कहानियों में रेखांकित करती जाती हैं। इनकी कहानियों में इन नई परिस्थितियों से उपजे द्वंद्व से ग्रस्त पात्रों की भरमार है। खास तौर से 'यही सच है' कहानी संग्रह के माध्यम से प्रकाश में आयी लेखिका की कहानियों में अत्यधिक परिपक्वता दिखाई देती है। इस संग्रह की कहानियाँ नई कहानी आंदोलन में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। नई कहानी आदोंलन आधुनिक मनुष्य के जीवन के द्वंद्व, उसकी विवशता, उसकी निरीहता, सामाजिक–पारिवारिक संबंधों में उसकी मनःस्थिति को प्रकट करने वाला आन्दोलन था। इस चेतना के साहित्य में स्त्री जीवन के विविध पहलू दृष्टिगोचर होते है। इन सब के बीच मन्नू भंडारी स्त्री जीवन में प्रेम का एकदम अलग ही स्वरूप लेकर आती है। यह स्वरूप परंपरा से एकदम इतर है। 'यही सच है' एक विवादास्पद कहानी है जिसकी नायिका अपने जीवन में आने वाले दो व्यक्तियों के मोहपाश में बँधी हुयी है। एक उसका वर्तमान है

Scanned by CamScanner